

सूरह अहकाफ़ - 46



सूरह अहकाफ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 35 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत 21 में आद जाति की बस्ती ((अहकाफ़)) की चर्चा की गई है जो यमन के समीप एक रेतीला क्षेत्र है। इसी कारण इस का नाम सूरह अहकाफ़ है।
- इस की आयत 21 से 28 तक में कुर्आन के अल्लाह की बाणी होने का दावा प्रस्तुत करते हुये शिर्क के अनुचित होने को उजागर किया गया है। और नबूवत से संबंधित संदेहों का निवारण किया गया है। इसी के साथ ईमान वालों को दिलासा तथा शुभसूचना दी गई है। और काफ़िरों के बुरे परिणाम से सावधान किया गया है।
- इस में ((आद)) जाति के परिणाम से शिक्षा प्राप्त करने को कहा गया है।
- आयत 29 से 32 तक जिन्नों के कुर्आन पाक सुनने, तथा उस पर ईमान लाने का वर्णन है।
- इस में मरने के पश्चात् जीवन से संबंधित संदेह को दूर किया गया है। और नरक की यातना से सावधान किया गया है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सहन करने का निर्देश दिया गया है। क्योंकि आप से पूर्व जो नबी आये थे उन को भी विभिन्न प्रकार से सताया गया था परन्तु उन्होंने धैर्य धारण किया।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हा, मीम।
2. इस पुस्तक का उतरना अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वदर्शी की ओर से है।
3. हम ने नहीं उत्पन्न किया है आकाशों

حَمِّ
تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ①
مَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا

तथा धरती को और जो कुछ उन के बीच है परन्तु सत्य के साथ एक निश्चित अवधि तक के लिये। तथा जो काफिर हैं उन्हें जिस बात से सावधान किया जाता है वे उस से मुँह मोड़े हुये हैं।

4. आप कहें कि भला देखो कि जिसे तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा, तनिक मुझे दिखा दो कि उन्होंने क्या उत्पन्न किया है धरती में से? अथवा उन का कोई साझा है आकाशों में? मेरे पास कोई पुस्तक^[1] प्रस्तुत करो इस से पूर्व की, अथवा बचा हुआ कुछ^[2] ज्ञान यदि तुम सच्चे हो।
5. तथा उस से अधिक बहका हुआ कौन हो सकता है जो अल्लाह के सिवा उसे पुकारता हो जो उस की प्रार्थना स्वीकार न कर सके प्रलय तक। और वह उस की प्रार्थना से निश्चेत (अन्जान) हों?
6. तथा जब लोग एकत्र किये जायेंगे तो वह उन के शत्रु हो जायेंगे और उन की इबादत का इन्कार कर^[3] देंगे।

بِالْحَقِّ وَلَاجِلٍ تُسَمَّى وَالَّذِينَ كَفَرُوا عَمَّا أُنذِرُوا
مُعْرِضُونَ ۝

قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَرُونِي
مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي
السَّمَوَاتِ إِنِّي نَسِيتُ مِنْ قَبْلِ هَذَا أَوْ أَشْرَافًا
مِنْ عِلْمِهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّن يَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَنْ
لَا يَسْتَجِيبُ لَهُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَهُمْ عَنْ
دُعَائِهِمْ غَفْلُونَ ۝

وَإِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ أَعْدَاءً وَكَانُوا
بِعِبَادَتِهِمْ كَافِرِينَ ۝

1 अर्थात् यदि तुम्हें मेरी शिक्षा का सत्य होना स्वीकार नहीं तो किसी धर्म की आकाशीय पुस्तक ही से सिद्ध कर के दिखा दो कि सत्य की शिक्षा कुछ और है। और यह भी न हो सके तो किसी ज्ञान पर आधारित कथन और रिवायत ही से सिद्ध कर दो कि यह शिक्षा पूर्व के नबियों ने नहीं दी है। अर्थ यह है कि जब आकाशों और धरती की रचना अल्लाह ही ने की है तो उस के साथ दूसरों को पूज्य क्यों बनाते हो?

2 अर्थात् इस से पहले वाली आकाशीय पुस्तकों का।

3 इस विषय की चर्चा कुर्आन की अनेक आयतों में आई है। जैसे सूरह यूनस, आयत:

7. और जब पढ़ कर सुनाई गई उन को हमारी खुली आयतें तो काफ़िरों ने उस सत्य को जो उन के पास आ चुका है, कह दिया कि यह तो खुला जादू है।
8. क्या वह कहते हैं कि आप ने इसे^[1] स्वयं बना लिया है? आप कह दें कि यदि मैं ने इसे स्वयं बना लिया है तो तुम मुझे अल्लाह की पकड़ से बचाने का कोई अधिकार नहीं रखते।^[2] वही अधिक ज्ञानी है उन बातों का जो तुम बना रहे हो। वही पर्याप्त है गवाह के लिये मेरे तथा तुम्हारे बीच। और वह बड़ा क्षमाशील दयावान् है।
9. आप कह दें कि मैं कोई नया रसूल नहीं हूँ, और न मैं जानता कि मेरे साथ क्या होगा^[3] और न तुम्हारे साथ। मैं तो केवल अनुसरण कर रहा हूँ उस का जो मेरी ओर वही (प्रकाशना) की जा रही है। मैं तो केवल खुला सावधान करने वाला हूँ।
10. आप कह दें: तुम बताओ यदि यह (कुर्आन) अल्लाह की ओर से हो और तुम उसे न मानो जब कि गवाही दे चुका है एक गवाह, इस्राईल की

وَإِذَا تَنَزَّلَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَاللَّعَنُوا لَتَأْتِيَآءُ هَٰؤُلَاءِ لَيَحْمُرُنَّ مِن ۖ

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ إِنْ افْتَرَيْتُهُ فَلَا تَمْلِكُونَ لِي مِنَ اللَّهِ شَيْئًا هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفِيضُونَ فِيهِ كَفَىٰ بِهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝

قُلْ مَا كُنتُ بِدَاعٍ مِنَ الرُّسُلِ وَمَا أَدْرِي مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ إِنْ أَنَّىٰءُ إِلَّا مَا يُوْحَىٰ إِلَيَّ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝

قُلْ أَدْرَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنَ عِنْدِ اللَّهِ وَكَفَرْتُم بِهِ وَشَهِدَ شَٰهِدٌ مِّنْ بَنِي إِسْرَٰءِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِ قَامَنَ وَاسْتَكْبَرُوا ثُمَّ قَالَ اللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَٰسِقِينَ ۝

290, सूरह मर्यम, आयत: 81, 82, सूरह अन्कबूत, आयत: 25, आदि।

- 1 अर्थात् कुर्आन को।
- 2 अर्थात् अल्लाह की यातना से मेरी कोई रक्षा नहीं कर सकता। (देखिये: सूरह अहकाफ, आयत: 44, 47)
- 3 अर्थात् संसार में। अन्यथा यह निश्चित है कि परलोक में ईमान वाले के लिये स्वर्ग तथा काफ़िर के लिये नरक है। किन्तु किसी निश्चित व्यक्ति के परिणाम का ज्ञान किसी को नहीं।

संतान में से इसी जैसी बात^[1] पर,
फिर वह ईमान लाया तथा तुम
घमंड कर गये? तो वास्तव में अल्लाह
सुपथ नहीं दिखाता अत्याचारी जाति
को^[2]

11. और काफ़िरों ने कहा, उन से जो
ईमान लाये यदि यह (धर्म) उत्तम होता
तो वह पहले नहीं आते हम से उस की
ओर। और जब नहीं पाया मार्ग दर्शन
उन्होंने ने इस (कुर्आन) से तो अब यही
कहेंगे कि यह तो पुराना झूठ है।
12. जब कि इस से पूर्व मूसा की पुस्तक
मार्गदर्शक तथा दया बन कर आ
चुकी। और यह पुस्तक (कुर्आन)
सच्चा^[3] बताने वाली है अर्बी भाषा
में^[4] ताकि वह सावधान कर दे
अत्याचारियों को और शुभसूचना हो
सदाचारियों के लिये।
13. निश्चय जिन्होंने कहा कि हमारा
पालनहार अल्लाह है। फिर उस पर

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا
سَبَقُونَا إِلَيْهِ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا بِهِ قَالُوا كَذِبٌ لَّهِ هَذَا
إِفْكٌ قَدِيدٌ ۝

وَمِنْ قَبْلِهِ كَتَبَ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً وَهَذَا كِتَابٌ
مُّصَدِّقٌ لِّسَانٍ عَرَبِيٍّ لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا
وَبَشِّرِ الصَّالِحِينَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا فَلَا خَوْفٌ

- 1 जैसे इस्राईली विद्वान अब्दुल्लाह पुत्र सलाम ने इसी कुर्आन जैसी बात के तौरात में होने की गवाही दी कि तौरात में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के नबी होने का वर्णन है। और वे आप पर ईमान भी लाये। (सहीह बुखारी: 3813, सहीह मुस्लिम: 2484)
- 2 अर्थात् अत्याचारियों को उन के अत्याचार के कारण ही कुपथ में रहने देता है। ज़बरदस्ती किसी को सीधी राह पर नहीं चलाता।
- 3 अपने पूर्व की आकाशीय पुस्तकों को।
- 4 अर्थात् इस की कोई मूल शिक्षा ऐसी नहीं जो मूसा की पुस्तक में न हो। किन्तु यह अर्बी भाषा में है। इसलिये कि इस से प्रथम सम्बोधित अरब लोग थे। फिर सारे लोग। इसीलिये कुर्आन का अनुवाद प्राचीन काल ही से दूसरी भाषाओं में किया जा रहा है। ताकि जो अर्बी नहीं समझते वह भी उस से शिक्षा ग्रहण करें।

स्थित रह गये तो कोई भय नहीं होगा
उन पर, और न वह^[1] उदासीन होंगे।

14. यही स्वर्गीय हैं जो सदावासी होंगे
उस में उन कर्मों के प्रतिफल (बदले)
में जो वे करते रहे।

15. और हम ने निर्देश दिया है मनुष्य को
अपने माता पिता के साथ उपकार
करने का। उसे गर्भ में रखा है
उस की माँ ने दुःख झेल कर। तथा
जन्म दिया उस को दुःख झेल कर।
तथा उस के गर्भ में रखने तथा
दूध छुड़ाने की अवधि तीस महीने
रही।^[2] यहाँ तक कि जब वह अपनी
पूरी शक्ति को पहुँचा तथा चालीस
वर्ष का हुआ, तो कहने लगा: हे मेरे
पालनहार! मुझे क्षमता दे कि कृतज्ञ
रहूँ तेरे उस पुरस्कार का जो तूने
प्रदान किया है मुझ को तथा मेरे
माता-पिता को। तथा ऐसा सत्कर्म
करूँ जिस से तू प्रसन्न हो जाये। तथा

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٤٦﴾

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا جَزَاءً لِّمَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿٤٧﴾

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا حَمَلَتْهُ أُمُّهُ
كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا وَحَمَلُهُ وَفِصْلُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا
حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً قَالَ رَبِّ
أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ
وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي
دُرْرَتِي ۖ إِنَّي نَبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٤٨﴾

- 1 (देखिये: सूरह, हा, मीम सज्दा, आयत: 31)

हदीस में है कि एक व्यक्ति ने कहा: हे अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! मुझे इस्लाम के बारे में ऐसी बात बतायें कि फिर किसी से कुछ पूछना न पड़े। आप ने फ़रमाया: कहो कि मैं अल्लाह पर ईमान लाया फिर उसी पर स्थित हो जाओ। (सहीह मुस्लिम: 38)

- 2 इस आयत तथा कुर्आन की अन्य आयतों में भी माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने पर विशेष बल दिया गया है। तथा उन के लिये प्रार्थना करने का आदेश दिया गया है। देखिये: सूरह बनी इस्राईल, आयत: 170। हदीसों में भी इस विषय पर अति बल दिया गया है। आदरणीय अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि एक व्यक्ति ने आप से पूछा कि मेरे सदव्यवहार का अधिक योग्य कौन है? आप ने फ़रमाया: तेरी माँ। उस ने कहा: फिर कौन है? आप ने कहा: तेरी माँ। उस ने कहा: फिर कौन है? आप ने कहा: तेरी माँ। तथा चौथी बार आप ने कहा: तेरे पिता। (सहीह बुखारी: 5971, तथा सहीह मुस्लिम: 2548)

सुधार दे मेरे लिये मेरी संतान को, मैं ध्यानमग्न हो गया तेरी ओर। तथा मैं निश्चय मुस्लिमों में से हूँ।

16. वही है स्वीकार कर लेंगे हम जिन से उन के सर्वोत्तम कर्मों को, तथा क्षमा कर देंगे उन के दुष्कर्मों को। (वह) स्वर्ग वासियों में है उस सत्य वचन के अनुसार जो उन से किया जाता था।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ نَقَبَلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّئَاتِهِمْ فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ وَعَدَ الصَّادِقُ الَّذِي كَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿١٦﴾

17. तथा जिस ने कहा अपने माता-पिता से: धिक् है तुम दोनों पर! क्या मुझे डरा रहे हो कि मैं (धरती से) निकाला^[1] जाऊँगा जब कि बहुत से युग बीत गये^[2] इस से पूर्व? और वह दोनों दुहाई दे रहे थे अल्लाह की: तेरा विनाश हो! तू ईमान ला! निश्चय अल्लाह का वचन सच्च है। तो वह कह रहा था कि यह अगलों की कहानियाँ हैं।^[3]

وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ إِفْكًا لَمَّا تَعِدَيْنِي أَنَّ أَكْرَهَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ مِنْ قَبْلِي ۚ وَهُمَا يَسْتَفِئَانِ اللَّهَ وَيُنَازِعَانِي فِي إِيمَانِي وَإِنَّ عَدَا لِللَّهِ حَقٌّ ۚ فَيَقُولُ مَا هَذَا إِلَّا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٧﴾

18. यही वह लोग हैं जिन पर अल्लाह की यातना का वचन सिद्ध हो गया उन समुदायों में जो गुज़र चुके इन से पूर्व जिन्न तथा मनुष्यों में से। वास्तव में वही क्षति में थे।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أَمْرٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ﴿١٨﴾

19. तथा प्रत्येक के लिये श्रेणियाँ हैं उन के

وَلِكُلِّ دَرَجَةٍ مِمَّا عَمِلُوا وَإِلَىٰ يُوفِيهِمْ أَعْمَالُهُمْ

1 अर्थात् मौत के पश्चात् प्रलय के दिन पुनः जीवित कर के समाधि से निकाला जाऊँगा। इस आयत में बुरी संतान का व्यवहार बताया गया है।

2 और कोई फिर जीवित हो कर नहीं आया।

3 इस आयत में मुसलमान माता-पिता का विवाद एक काफिर पुत्र के साथ हो रहा है जिस का वर्णन उदाहरण के लिये इस आयत में किया गया है। और इस प्रकार का वाद-विवाद किसी भी मुसलमान तथा काफिर में हो सकता है। जैसा कि आज अनेक पश्चिमि आदि देशों में हो रहा है।

وَهُمْ لَا يَظْلُمُونَ ﴿٥٠﴾

कर्मानुसार। और उन्हें भरपूर बदला दिया जायेगा उन के कर्मों का तथा उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

20. और जिस दिन सामने लाये जायेंगे जो काफिर हो गये अग्नि के। (उन से कहा जायेगा): तुम ले चुके अपना आनन्द अपने संसारिक जीवन में और लाभान्वित हो चुके उन से। तो आज तुम को अपमान की यातना दी जायेगी उस के बदले जो तुम घमंड करते रहे धरती में अनुचित तथा उस के बदले जो उल्लंघन करते रहे।

وَيَوْمَ نَعْرِضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَذْهَبْتُمْ طِبِّيتَكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَعْتَمَرْتُمْ بِهَا ۖ فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُونَ ﴿٥١﴾

21. तथा याद करो आद के भाई (हूद^[1]) को। जब उस ने अपनी जाति को सावधान किया, अहकाफ^[2] में जब कि गुजर चुके सावधान करने वाले (रसूल) उस के पहले और उस के पश्चात्, कि इबादत (वंदना) न करो अल्लाह के अतिरिक्त की। मैं डरता हूँ तुम पर एक बड़े दिन की यातना से।

وَاذْكُرْ أَخَا عَادٍ إِذْ أَنْذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ خَلَّتِ الْمُدْرِمِينَ بَيْنَ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ أَلَّا يَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٥٢﴾

22. तो उन्होंने कहा कि क्या तुम हमें फेरने आये हो हमारे पूज्यों से? तो ला दो हमारे पास जिस की हमें धमकी दे रहे हो यदि तुम सच्चे हो।

قَالُوا اجْعَلْنَا لِنَافِكُنَا عَنْ الْهِمَّتِ ۖ قَاتِنَا بِمَا نَعِبُدُ ۖ إِنَّا كُنَّا مِنَ الضَّالِّينَ ﴿٥٣﴾

1 इस में मक्का के प्रमुखों को जिन्हें अपने धन तथा बल पर बड़ा गर्व था अरब क्षेत्र की एक प्राचीन जाति की कथा सुनाने को कहा जा रहा है जो बड़ी सम्पन्न तथा शक्तिशाली थी।

2 अहकाफ: अर्थात: ऊँचा रेत का टीला है। यह जाति उसी क्षेत्र में निवास करती थी जिसे ((रुबअल खाली)) (अर्थात अरब टापू का चौथाई भाग जो केवल मरुस्थल है) कहा जाता है। यह क्षेत्र ओमान से यमन तक फैला हुआ था। जहाँ आज कोई आबादी नहीं है। इसी जाति को प्रथम आद भी कहा गया है।

23. हूद ने कहा: उस का ज्ञान तो अल्लाह ही को है। और मैं तुम्हें वही उपदेश पहुँचा रहा हूँ जिस के साथ मैं भेजा गया हूँ। परन्तु मैं देख रहा हूँ तुम को कि तुम अज्ञानता की बातें कर रहे हो।

24. फिर जब उन्होंने देखा एक बादल आते हुये अपनी वादियों की ओर तो कहा: यह एक बादल है हम पर बरसने वाला। बल्कि यह वही है जिस की तुम ने जल्दी मचाई है। यह आँधी है जिस में दुःखदायी यातना है।^[1]

25. वह विनाश कर देगी प्रत्येक वस्तु को अपने पालनहार के आदेश से, तो वे हो गये ऐसे कि नहीं दिखाई देता था कुछ उन के घरों के अतिरिक्त। इसी प्रकार हम बदला दिया करते हैं अपराधि लोगों को।

26. तथा हम ने उन को वह शक्ति दी थी जो इन^[2] को नहीं दी है। हम ने बनाये थे उन के कान तथा आँखें और दिल, तो नहीं काम आये उन के कान और उन की आँखें तथा न उन

قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَأُبَلِّغُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ وَلَكِنِّي أَرَأَيْتُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ﴿٢٣﴾

فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقِيلًا وَاذْيَبَ بِهِمَ قَالَ هَذَا عَارِضٌ مُّطَرٌ نَّابِلٌ فَمَا اسْتَعْجَلْتُم بِهِ رِيحٌ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٤﴾

تَذْمُرُ كُلُّ شَيْءٍ بِأَمْرِ رَبِّهَا فَأَصْبَحُوا لَا يُرَى إِلَّا مَسَكِنَتُهُمْ ذَكَرْكَ نَجْرِي الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ﴿٢٥﴾

وَلَقَدْ مَكَّنَّهُمْ فِيْمَانٍ إِنَّ مَكَّنَّكُمْ فِيهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَآبْصَارًا وَأَفْئِدَةً فَمَا أَغْنَى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَا آبْصَارُهُمْ وَلَا أَفْئِدَتُهُمْ مِنْ شَيْءٍ إِذْ كَانُوا يَجْحَدُونَ

1 हदीस में है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बादल या आँधी देखते तो व्याकुल हो जाते। आईशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा: अल्लाह के रसूल! लोग बादल देख कर वर्षा की आशा में प्रसन्न होते हैं और आप क्यों व्याकुल हो जाते हैं? आप ने कहा: आईशा! मुझे भय रहता है कि इस में कोई यातना न हो? एक जाति को आँधी से यातना दी गई। और एक जाति ने यातना देखी तो कहा: यह बादल हम पर वर्षा करेगा। (सहीह बुखारी: 4829, तथा सहीह मुस्लिम: 899)

2 अर्थात् मक्का के काफिरों को।

के दिल कुछ भी। क्योंकि वे इन्कार करते थे अल्लाह की आयतों का तथा घेर लिया उन को उस ने जिस का वह उपहास कर रहे थे।

بِآيَاتِ اللَّهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ
يَسْتَهْزِءُونَ ﴿١٠﴾

27. तथा हम ध्वस्त कर चुके हैं तुम्हारे आस पास की बस्तियों को। तथा हम ने उन्हें अनेक प्रकार से आयतें सुना दी ताकि वह वापिस आ जायें।

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِنَ الْقُرَى
وَصَرَّفْنَا الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿١١﴾

28. तो क्यों नहीं सहायता की उन की उन्होंने जिन को बनाया था अल्लाह के अतिरिक्त (अल्लाह के) समिप्य के लिये पूज्य (उपास्य)? बल्कि वह खो गये उन से, और यह^[1] उन का झूठ था, तथा जिसे स्वयं वे घड़ रहे थे।

فَلَوْلَا نَصْرُهُمُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ
اللَّهِ ثَرَاةً إِلَهَةً بَلَّ صَلَواتُ عَنْهُمْ وَذَلِكَ
إِفْلَاحُهُمْ وَمَا كَانُوا يَفْقَهُونَ ﴿١٢﴾

29. तथा याद करें जब हम ने फेर दिया आप की ओर जिन्नों के एक^[2] गिरोह को ताकि वह कुर्आन सुनें। तो जब वह

وَإِذْ صَرَفْنَا إِلَيْكَ نَفَرًا مِنَ الْجِنِّ يَسْمَعُونَ
الْقُرْآنَ فَلَمَّا حَصَرُوهُ قَالُوا أَنْصِتُوا فَلَمَّا
قُضِيَ وَلَوْ إِلَى قَوْمِهِمْ مُنْذِرِينَ ﴿١٣﴾

1 अर्थात अल्लाह के अतिरिक्त को पूज्य बनाना।

2 आदरणीय इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि एक बार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपने कुछ अनुयायियों (सहाबा) के साथ उकाज़ के बाज़ार की ओर जा रहे थे। इन दिनों शैतानों को आकाश की सूचनायें मिलनी बंद हो गई थी। तथा उन पर आकाश से अंगारे फेंके जा रहे थे। तो वे इस खोज में पूर्व तथा पश्चिम की दिशाओं में निकले कि इस का क्या कारण है? कुछ शैतान तिहामा (हिजाज़) की ओर भी आये और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तक पहुँच गये। उस समय आप ((नख़ला)) में फ़ज़्र की नमाज़ पढ़ा रहे थे। जब जिन्नों ने कुर्आन सुना तो उस की ओर कान लगा दिये। फिर कहा कि यही वह चीज़ है जिस के कारण हम को आकाश की सूचना मिलनी बंद हो गई है। और अपनी जाति से जा कर यह बात कही। तथा अल्लाह ने यह आयत अपने नबी पर उतारी। (सहीह बुख़ारी: 4921)

इन आयतों में संकेत है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जैसे मनुष्यों के नबी थे वैसे ही जिन्नों के भी नबी थे। और सभी नबी मनुष्यों में आये। (देखिये: सूरह नहल, आयत: 43, सूरह फुर्कान, आयत: 20)

उपस्थित हुये आप के पास तो उन्होंने कहा कि चुप रहो। और जब पढ़ लिया गया तो वे फिर गये अपनी जाति की ओर सावधान करने वाले हो कर।

30. उन्होंने कहा: हे हमारी जाति! हम ने सुनी है एक पुस्तक जो उतारी गई है मूसा के पश्चात्। वह अपने से पूर्व की किताबों की पुष्टि करती है। और सत्य तथा सीधी राह दिखाती है।

31. हे हमारी जाति! मान लो अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात को। तथा ईमान लाओ उस पर, वह क्षमा कर देगा तुम्हारे लिये तुम्हारे पापों को तथा बचा देगा तुम्हें दुःखदायी यातना से।

32. तथा जो मानेगा नहीं अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात तो नहीं है वह विवश करने वाला धरती में। और नहीं है उस के लिये अल्लाह के अतिरिक्त कोई सहायक। यही लोग खुले कुपथ में हैं।

33. और क्या उन लोगों ने नहीं समझा कि अल्लाह, जिस ने उत्पन्न किया है आकाशों तथा धरती को, और नहीं थका उन को बनाने से, वह सामर्थ्यवान है कि जीवित कर दे मुर्दों को? क्यों नहीं? वास्तव में वह जो चाहे कर सकता है।

34. और जिस दिन सामने लाये जायेंगे जो काफिर हो गये नरक के, (और उन से कहा जायेगा): क्या यह सच्च नहीं है? वे कहेंगे: क्यों नहीं? हमारे

قَالُوا الْقَوْمَتَا إِنَّا سَمِعْنَا كِتَابًا أُنْزِلَ مِنْ بَعْدِ
مُوسَىٰ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ
وَالْأَمْرِ طَرِيقًا مُسْتَقِيمًا ۝

يَقَوْمًا اجْبِتُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَآمِنُوا بِهِ يَغْفِرَ لَكُمْ مِنْ
دُخُولِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝

وَمَنْ لَا يُحِبَّ دَاعِيَ اللَّهِ فَلَيْسَ بِمُعِजِرٍ فِي الْأَرْضِ
وَلَيْسَ لَهُ مِنْ دُونِهِ أَولِيَاءُ أُولَئِكَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
وَلَمْ يَعْ يَخْلُقْهُنَّ بِقَدِيرٍ عَلَى أَنْ يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ
بَلَىٰ إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَلَيْسَ هَذَا
بِالْحَقِّ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ
بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝

पालनहार की शपथ! वह कहेगा: तब चखो यातना उस कुफ़्र के बदले जो तुम कर रहे थे।

35. तो (हे नबी!) आप सहन करें जैसे साहसी रसूलों ने सहन किया। तथा जल्दी न करें उन (की यातना) के लिये। जिस दिन वह देख लेंगे जिस का उन्हें वचन दिया जा रहा है तो समझेंगे कि जैसे वह नहीं रहे हैं परन्तु दिन के कुछ^[1] क्षण। बात पहुँचा दी गई है, तो अब उन्हीं का विनाश होगा जो अवैज्ञाकारी हैं।

فَأَصْبِرْ كَمَا صَبَرْنَا وَلَوْ الْعِزُّ مِنْ الرُّسُلِ
وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَهُمْ كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ
مَا يُوعَدُونَ لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِنْ نَهَارٍ
بَلَاءٌ ۚ فَهَلْ يُهْلِكُ إِلَّا الْقَوْمَ الْفَاسِقُونَ ۚ

1 अर्थात् प्रलय की भीषणता के आगे संसारिक सुख क्षणभर प्रतीत होगा। हदीस में है कि नारकियों में से प्रलय के दिन संसार के सब से सुखी व्यक्ति को ला कर नरक में एक बार डाल कर कहा जायेगा: क्या कभी तुम ने सुख देखा है? वह कहेगा: मेरे पालनहार! (कभी) नहीं (देखा)। (सहीह मुस्लिम शरीफ: 2807)